

॥ मंगला गौरी व्रत उद्यापन ॥

॥ जय मंगला गौरी माता ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ उद्यापन कब और क्यों ॥

उद्यापन का अर्थ संकल्पित व्रतों का समापन श्रद्धा से करना है। मंगला गौरी में व्रत की अवधि हर घर में समान नहीं: कहीं सोलह या बीस मंगलवार, कहीं विवाह के बाद कई वर्षों तक श्रावण के मंगलवारों की परंपरा है। अपनी प्रतिज्ञा और परिवार की रीति पहले जाँचें।

दिन तय करना

कई घर संकल्प पूरा होने पर श्रावण के मंगलवार को उद्यापन करते हैं। पाँचवें वर्ष या अंतिम मंगलवार की रीति कुछ समुदायों में है, पर इसे सार्वभौमिक नियम न मानें। स्थानीय पंचांग और अपने पुरोहित से दिन तथा विशेष विधान की पुष्टि करें।

सामग्री और अतिथि

सामान्य गौरी पूजा की सामग्री, कथा और आरती की प्रति, फल-प्रसाद तथा भेंट तैयार रखें। सुहागिनों को वाण या श्रृंगार-सामग्री देने का विधान जहाँ प्रचलित हो, वहाँ अपनी सामर्थ्य से दें। संख्या और उपहार का दबाव न लें।

घर में सहयोग

पूजा, भोजन, बैठने और प्रसाद बाँटने की जिम्मेदारी परिवार में बाँटें। किसी को केवल वैवाहिक स्थिति या आर्थिक सामर्थ्य के कारण अपमानित न करें। सरल और स्वच्छ व्यवस्था में भी भावपूर्वक उद्यापन किया जा सकता है।

॥ उद्यापन की सामान्य विधि ॥

१. संकल्प और गौरी पूजन

स्नान कर चौकी पर देवी का चित्र रखें। गणेशजी का स्मरण करें और संकल्प पूरा होने के लिए कृतज्ञता व्यक्त करें। कलश, दीपक, हल्दी-कुमकुम, अक्षत, फूल, चुनरी और नैवेद्य अपनी परंपरा से अर्पित करें।

२. कथा और आरती

मंगला गौरी की कथा पढ़ें और माता की आरती करें। घर की रीति में विशेष मंत्र, हवन या षोडशोपचार पूजा हो तो जानकार पुरोहित की सहायता लें। खुले दीपक और हवन की अग्नि में सुरक्षा का ध्यान रखें।

३. प्रसाद और भेंट

प्रसाद बाँटें। परिवार के अनुसार आमंत्रित महिलाओं या अन्य अतिथियों को आदरपूर्वक भोजन अथवा उपयोगी भेंट दें। हर व्यक्ति की भोजन-सीमा और सुविधा का सम्मान करें। दिखावे या ऋण लेकर आयोजन करने की आवश्यकता नहीं है।

४. समापन की प्रार्थना

माता गौरी से परिवार में सद्भाव, स्वास्थ्य और विवेक की कामना करें। पूजा का सामान स्वच्छ ढंग से समेटें। यदि स्वास्थ्य या किसी अन्य कारण संकल्पित व्रत पूरे न कर सकें, तो परिवार के बड़े या पुरोहित से अपनी परिस्थिति के अनुसार मार्गदर्शन लें।

उद्यापन की संख्या, वर्ष, भेंट और अनुष्ठान क्षेत्र के अनुसार बदलते हैं। “उद्यापन न हो तो व्रत निष्फल” जैसे कठोर दावे सब पर लागू न मानें।

॥ जय मंगला गौरी माता ॥